जुती हुई धरती

यों तो मुझे श्रीमान् ईदनाणी के कार्यालय में गये हुए छह मास बीत चुके थे, परन्तु बॉस को मेरे प्रारूप लेखन की इतनी क़द्र होगी, यह मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। अनिता, हमारी स्टेनो टाइपिस्ट छुट्टी पर गई थी। अब मुझे ही सभी पत्र बॉस के डिक्टेशन लेकर, टाईप करने थे।

बॉस ने कहा, ''जैसे तेरे अक्षर हैं, वैसी ही है तेरी मोतियों जैसी टाईपिंग, और....'' मुझे नख से शिख तक घूर कर, उन्होंने मुस्करा कर कहा, ''स्वयं भी एक मोती हो।''

''अंकल...!'' मेरे मुख से निकल गया और मैं हँसते-हँसते चली आई। मेरा यह नियम है कि कार्यालय से आने के बाद पापड़ खा कर, पानी पी कर पड़ोस वाली सरोज के पास चली जाती हूँ। उसका पति रात को देर से लौटता है, इसलिये सरोज शाम के समय मेरे सान्निध्य के लिये बाट जोहती रहती है। जब मैंने बॉस की मोती वाली बात उसे सुनाई, तो उसने मेरे गाल पर थपकी मार कर कहा, ''संभलना, किसी दिन इसी बॉस के लिये तेरे मन में प्यार न जाग जाये।''

मैंने कहा, ''हद हो गई सरजू! तुम कोई अन्तर्यामी हो क्या? या भविष्य बतलाने की कला सीख रही हो? लेकिन तुम बिल्कुल गलत हो। संसार में जवान लड़कों का क्या अकाल पड़ गया है कि मैं जिसे अंकल कहूँ, उसी से प्यार करने लगूँगी?''

मुख पर रूठन लेकर मैं चली आई। परन्तु दूसरे दिन भी मेरे पैर मुझे अपने आप सरोज के घर की ओर घसीट कर ले गये। वह आ कर मेरे पास बैठी। मेरे मुख को ठुड्डी से पकड़ कर अपनी ओर फेरते हुए उसने कहा, ''तुम कल मुझसे रूठ गईं थीं न?'' मेरे मुख पर अचानक मुस्कराहट आ गई।

सरजू ने गले लगाते हुए कहा, ''मैंने तो केवल मज़ाक किया था। क्या मुझे इतना भी मालूम नहीं है कि तुम कितनी स्वाभिमानी लड़की हो? ऐसा न होता तो जब मैं कॉलेज में ढेर हो गई थी तब तुम हजारों नज़रों को लताड़ कर पाक पवित्र कैसे निकलकर आ पातीं....!''

मेरा मन तो सरोज को नई घटना सुनाने के लिये तड़प रहा था, सो ठहाका मार कर मैंने कहा, ''सरजू, मजे की बात हुई आज।'' सरजू ने आँखों और मुख पर मुस्कान ला कर पूछा, ''क्या हुआ?''

मैंने कहा, ''मेरे बी.कॉम प्रथम श्रेणी में पास होने का पता चल गया कार्यालय

वालों को। मैंने देखा, मेरी टेबल पर रजनी गंधा के फूलों का गुलदस्ता रखा है। एक चिट पिन से लगी हुई थी। उस पर लिखा था, "बधाई"। मैं एक दम समझ गई कि यह काम किसका है। शुक्रिया अदा करने के लिये मैं एक दम बॉस के रूम में चली गई। बॉस मेरी ओर ही ताकते रहे। मुझे समझ में ही नहीं आ रहा था कि कौन से शब्दों में शुक्रिया अदा करूँ। मेरे दुपट्टे का कोना बार-बार दाँतों के बीच में फंस रहा था। आखिर मैंने हिम्मत कर के कहा, "अंकल, शुक्रिया" और हँसते हँसते- अपनी सीट पर आकर बैठी। कार्यालय के अन्य कर्मचारी भी इकट्ठे हो गये। वे गुलदस्ते को देख कर बहुत मज़ाक करते रहे और एक गंजा, जिसके संबंध में मैं तुझे बताती रहती हूँ कि उसकी आवाज़ अच्छी है, वह खिड़की की ओर मुँह करके गाने बैठ गया।

"उन्हें देख कर जी रहे हैं सभी...।" सरजू, मैं तुझे क्या बताऊँ, मुझे इतनी प्रसन्नता हो रही थी कि काश, सचमुच मर जाऊँ। इतने में बॉस बाहर निकल आये। कार्यालय के बाबुओं ने मिल कर गुलदस्ता ऊपर उठा कर कहा, "बॉस, थ्री चीयर्स फार निर्मला! हिप हिप हुर्रे!"

बॉस ने कहा, "कल निर्मला के सम्मान में ओबराय शेरेटान में पार्टी!"

"अरी सरजू! " मैंने सरोज के गालों को खींचते हुए कहा, "उस समय मेरे कानों की लोलकियाँ ही लाल पड़ गईं थीं।"

सरोज ने खींच कर मुझे गले लगा लिया।

मैंने घर में आकर मम्मी को बताया कि कल बॉस मेरे सम्मान में सारे कार्यालय के कर्मचारियों को एक बड़े होटल में पार्टी देंगे। मम्मी ने कहा, "क्यों, हम लोगों को आने के लिये नहीं कहा है?"

मम्मी ने रात में मेरे डैडी से कहा, "देखो निर्मला के बॉस के काम! सारे कार्यालय के कर्मचारियों को पार्टी दे रहा है, बाकी हम मां बाप बैठे रहेंगे।"

डैडी ने कहा, "अच्छा हुआ कि नहीं कहा, नहीं तो तेरी चिल पों यूँ शुरू हो जाती। अच्छे कपड़े नहीं हैं, चप्पल नहीं हैं...।"

मैंने मन में सोचा, अब अगली पगार में से माँ के के लिये पहले अच्छे कपड़े ख़रीद कर लाऊँगी। अच्छे कपड़े न होने के कारण ही तो अब तक नाते रिश्तेदारों के पास शादी ब्याह में भी हम लोग नहीं जाते हैं। उधार के कपड़े लेकर पहनना डैडी को अच्छा नहीं लगता है।

ओबेराय शेरेटान में पार्टी देकर बॉस ने मानो मेरे व्यक्तित्व को चार चाँद लगा दिये। कई फोटो भी खींचे गये। मुझे घर आते-आते ऐसा महसूस हो रहा था मानो मैं एक छोटा सा पौधा थी, जो तूफ़ान में जड़ों से उखड़ गया है और ऊपर....और ऊपर उड़ता जा रहा है और-सितारों के बीच एक सितारा बन कर खड़ा हो गया है।

उस दिन देर से लौटने के कारण मैं सरोज के पास भी नहीं गई। मम्मी डैडी को बातें बताने की मेरी आदत नहीं है और विशेषकर जब मम्मी की इच्छा पूर्ण ही नहीं कर पाई थी तो मैं कैसे अपने कपड़ों, मुखाकृति आदि की सराहना के फूल उसे दिखा पाती? मैंने अँगूठी, बूट, पर्स सब इस पार्टी के लिये ख़रीदे थे।

रात को मम्मी समझी कि मुझे नींद आ गई होगी। उसने डैडी से कहा, ''आज आपने लड़की को पार्टी से लौटने के बाद देखा?''

''हाँ, साली लड़की बड़ी हो गई है, दिखने में भी बहुत सुंदर है....।''

''तो अब कुछ करना चाहिये। सुना नहीं है पुरुष की बैरन छुटकली, औरत की बैरन सुन्दरता।'' मम्मी ने कहा, परन्तु डैडी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

दूसरे दिन मैं बॉस के केबिन में गई तो पहले ही उनकी पत्नी वहां बैठी थी। मैंने उसे कहते सुना, ''रावण!'' मेरे मुंह से अकस्मात् निकला, ''क्या?''

उसने कहा, ''कुछ- नहीं'' और मुंह फुला कर चली गई।

मैंने ''रावण'' शब्द वाली बात आकर सरोज को बताई। सरोज ने फोटो देख कर कहा, ''यह देख रही हो, प्रत्येक फोटो में बॉस तेरे साथ सटे- हुए खड़े हैं।''

मैंने कहा, ''तो क्या, इससे वे रावण कैसे हो गये? बड़ी बात यह है कि मैं तो उनके सामने ही बॉस को अंकल कह कर पुकार रही थी...।''

लेकिन एक दिन बाद एक अन्य अजीब घटना हुई।

बॉस ने मुझे केबिन में बुलवा कर कहा, ''मैं तुझे सामने बैठे रहने को कहूं तो तू अवश्य आश्चर्य में पड़ेगी। परन्तु तू शायद इस बात को समझ नहीं पा रही है। कोई किसी को अचानक ही अच्छा लगने लगता है। क्यों अच्छा लगने लगता है? कोई कारण नहीं होता है। वह उससे प्यार करना चाहता है, कोई कारण नहीं होता है। कभी उसको बाँहों में उठाने की तमन्ना उसके सीने में भड़क उठती है।''

मैंने हँस कर कहा, ''परन्तु अंकल, आप इतने बड़े, आपकी श्रीमती...।'' उन्होंने बीच में काटते हुए कहा, ''श्रीमती! ...ओह श्रीमती से मुझे कभी एक क्षण के लिये भी प्यार नहीं हुआ है। निर्मला, तुम विश्वास करोगी? एक क्षण के लिये भी वह मुझे ऐसी नहीं लगी है, जिसे खींच कर सीने से लगा कर चूमा जा सके।''

मैं बॉस की ये सब बातें सुकर मन ही मन हँस रही थी। अन्त में जैसे ही उठने लगी, वैसे ही बॉस ने मुझे बाँह से पकड़कर बिठाते हुए कहा, ''बैठ, अब भागती कहाँ है?''

मैंने मन में कहा, किसी पढ़ी लिखी लड़की के भागने की राहें कोई इस प्रकार भी बंद कर सकता है क्या? लेकिन उनका हाथ मेरी बाँह को इतना ज़ोर से पकड़े हुए था कि मुझे लगा, मेरे गालों में रक्त प्रवाह तेज़ हो गया है।

बॉस ने सिर झुका कर कहा, ''रात दिन बस तू ही आँखों के सामने घूमती रहती है।

पहले दूसरे दिन मैं बॉस के केबिन में गई तो पहले से ही उनकी पत्नी वहां बैठी थी। ''मैंने उसे कहते सुना, शाबाश!'' मेरे मुंह से अकस्मात निकला, ''क्या?''

पता नहीं क्यों, तुझे सामने बिठा कर देखते रहने की भावना तृप्त ही नहीं होती...।''

''अंकल, मम्मी के साथ आज शादी में जाना है, जाऊँ क्या?''

बॉस ने सिर उठाया। वे बहुत ही दुखी...पीड़ित व्यक्ति लग रहे थे। मन ने कहा, ''काश! ऐसे स्नेहशील व्यक्ति को पत्नी अच्छी मिलती....।''

रक्त प्रवाह केवल गालों में ही नहीं, परन्तु सारे शरीर में ऐसा तेज़ हो गया था कि लग रहा था, मेरे पैर ज़मीन पर पड़ ही नहीं रहे हैं....कहीं मैं अप्सरा तो नहीं बन गई हूँ। ऐसे मधुर विचारों से लिपटी मैं आकर सरोज की गोद में छिप गई।

मैंने जब सरोज को पूरी बात बताई, तो सरोज ने कहा, ''तभी उस की पत्नी ने कहा था-रावण।''

''परन्तु वह रावण है नहीं... पत्नी से उसने कभी प्यार किया ही नहीं है।'' मैंने कहा।

सरोज ने चिढ़ाने के ढंग से कहा, ''उसने पत्नी को कभी प्यार किया ही नहीं है, केवल दो बच्चे ही तो पैदा किये हैं। अरी पगली, इस रावण पर दया करके कहीं तुम दो बच्चों की माँ का घर न उजाड़ देना।''

''छी,'' मैं उस दिन सरोज से फिर रूठ गई। मैंने घर आकर ठंडे पानी से स्नान किया और मम्मी डैडी के साथ विवाह समारोह में जाने हेतु तैयार होने लगी।

डैडी ने कहा, ''अब बेटी कमा रही है, तभी तो तेरी माँ खूब सुन्दर कपड़े खरीद लाई है।''

वाकई मम्मी ने जो नई साड़ी पहनी थी, उससे वह दस वर्ष छोटी आयु की लग रही थी।

अचानक बॉस हमारे घर आ पहुँचे। हम सब चकित हो गये। सुगंध का एक समुद्र बहने लगा सारे घर में।

''अंकल!...''

''हाइ निमू! यह तेरी बहन है?'' अंकल ने मेरे सिर पर हाथ रखा।

''मम्मी।''

मम्मी ने उलझन में कुर्सी के बदले स्टूल रख दी...। ग़लती महसूस की तो उसका चेहरा उतर गया।

बॉस ने कहा, ''सचमुच यह तेरी मम्मी है?''

''जी हाँ।'' मैंने सिर हिलाते हुए कहा।

''मानो नूरजहाँ के हाथ से कबूतर उड़ गया है।'' बॉस ने कहा।

हम दोनों माँ बेटी ठहाके मार कर हँस पड़ीं।

दूसरे कमरे में से डैडी आये। ताश के पत्ते उनके हाथ में थे।

मैंने कहा, ''डैडी! मेरे बॉस, श्रीमान् ईदनाणी।''

''ओ,'' डैडी ने उनसे हाथ मिलाया, ''मज़े ही मज़े हैं आपके भाग्य में। निर्मला बताती है कि आप अभी और दो शाखाएँ खोलने वाले हैं।''

''एक्जेक्टिली। उसने बिल्कुल सही बात बताई है। इसीलिये तो आप के पास आने की तकलीफ़ करनी पड़ी है मुझे।''

डैडी और मैं हक्के बक्के होकर बॉस के मुँह को ताकने लगे।

''बात यह है कि अभी-अभी निर्मला की किसी सहेली का फोन आया कि अधिक पगार पर वह निर्मला को अपने कार्यालय में नौकरी दिला सकती है। लेकिन आप की लड़की का काम हमें इतना पसंद है कि हमारा कार्यालय उसे छोड़ने वाला नहीं है। अधिक पगार भी तत्काल दिया जायेगा।''

''आहा,'' मैंने मन ही मन एक बड़ा ठहाका मारा। मम्मी डैडी बॉस का आदर सत्कार करने में जुट गए। बॉस ने, दोनों से नज़र बचाकर मुझसे कहा, ''कल जल्दी आना। समय कैसे बीतता है तुम्हारे बिना, यह केवल मैं ही जानता हूँ।''

अपने घर में बिल्ली भी शेर होती है। सो मैंने बॉस से हल्की छेड़खानी की, ''इक पल जैसे इक युग बीता!''

''दैट्स इट, दैट्स इट।'' बड़ा ठहाका मारा बॉस ने। डैडी ने पूछा, ''क्या बात है?''

बॉस अपने को कॉलेज का लड़का समझने लगे। उन्होंने हँसकर कहा, ''यह हमारी प्रायवेट कोडवर्ड बातचीत है।''

जाते समय मैंने देखा, बॉस की दृष्टि मेरी मम्मी पर अटक गई। मैंने कहा, ''अंकल, बाइ!''

बॉस उठे और सिगरेट मुँह में डालकर डैडी से कहने लगे, ''व्हिस्की वग़ैरह पीते हों तो हाजिर है...कार में...।''

डैडी ने कहा, ''नहीं, शुक्रिया। हम लोग अभी किसी रिश्तेदार के विवाह समारोह में जा रहे हैं...।''

''हो हो हो हो...।'' बॉस की हँसी में अब मानवीय स्वाभाविकता नहीं दिख रही थी। बॉस चले गये। डैडी ने कपड़े बदले और हमारे साथ चल दिये।

हम लोग विवाह समारोह में ज़रा देर से पहुँचे। हाल में घुसते ही मैंने एक रिमार्क सुना ''चाँद तारा।''

मम्मी को थोड़ी देर पहले बॉस ने नूरजहाँ कहा था और यहाँ भी वह चाँद की हैसियत रख रही है। तब तो मम्मी मेरी आयु में न जाने कितनी सुंदर रही होगी! इस बात की ओर तो मेरा कभी ध्यान ही नहीं गया था।

परन्तु यह क्या? विवाह के पंडाल में मैं जहाँ से निकल जाती थी, वहाँ मानो हर नज़र में मशालें जल उठतीं थीं। मैं पहले समझी कि यह शायद मेरा भ्रम है। लेकिन मैंने देखा कि एक रिश्ते तय करवाने वाली औरत मम्मी को दूर ले गई।

मम्मी वापिस मेरे और डैडी के पास आयी तब उसका मुख चमक रहा था। डैडी को कहने लगी, ''यह रिश्ते तय करवाने वाली औरत कह रही है कि वह लड़का जो स्टेज पर वर वधु के पास बैठा है वह विदेश से आया है। करोड़पति है। पंद्रह दिनों के भीतर विवाह कर वापिस विदेश जाना चाहता है।''

''समाचार पत्रों में विज्ञापन क्यों नहीं देता?'' डैडी ने कहा।

मम्मी ने बड़े गर्व से कहा, ''इसे चाहिये सिंधी लड़की और हमारी निर्मला उसे जंच गई है।''

''बेकार की बातें कर रही है यह रिश्ते तय करवाने वाली औरत। करोड़पति लेगा भी तो लाखों रुपये की नहीं? बड़ी बात कि वह स्वयं भी बहुत सुन्दर ...।''

यह वार्तालाप मेरे सुनने के लिये ही हो रहा था।

मैंने आँखें उठाकर उस लड़के की ओर देखा। वह शायद मेरी ओर ही देख रहा था। लेकिन मुझे निहारता देख, उस सौंदर्य के भंडार ने एक क्षण के लिये नज़रें झुका दीं और फिर सीधे मेरी ओर ही देखने लगा। मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई। मैंने मन में कहा, ''देखा जाये तो पुरुष स्वयं नारी की तुलना में अधिक सुंदर है।''

''रिश्ते तय करवाने वाली औरत कहती है कि इस दौलताणी लड़के को आपकी निर्मला अच्छी लग रही है...।'' मम्मी ने डैडी से कहा, परन्तु शायद मुझे सुनाने के लिये। मुझे लगा, धड़ाम से एक नृत्यांगना किसी बड़े विशाल नगाडे पर उतर आई है....अपने घुंघरू बंधे पैरों से थई थई, करती नगाड़े पर नाच रही है। नगाड़े के चारों ओर फैली थी अथाह धरती .. जुती हुई थी सारी धरती....सूर्य ऊपर खड़ा धरती के जुते टेढ़े मेढ़े खेतों में अपनी किरणों की धराओं से कुछ ढूंढ रहा था।

रिश्ते तय करवाने वाली औरत फिर चील की भाँति मँडराई। इस बार वह मम्मी और डैडी दोनों को एक तरफ ले गई। हल्की मुस्कान मेरे मुख पर थी, जब श्रीमान् दौलताणी ने आईसक्रीम की प्लेट लाकर मुझे पेश की।

''मैंने अभी-अभी आइसक्रीम खाई है।'' मैंने कहा।

''तो यह भी खानी पड़ेगी...।''

मैंने हँसकर कहा, ''जबरन...!''

''तो खूबसूरती के खुदाओं के पास विनती कुबूल हो भला।''मैंने आईसक्रीम की प्लेट हाथ में ली। उसका एक एक शब्द मेरे कानों में बार-बार गूंजने लगा। सरल सिंधी शब्दों में उसने मेरी आत्मा को इस शरीर से अलग कर आकाश में खड़ा कर दिया था। वह हँसती हुई आँखों से एक चुभती हुई दृष्टि मेरी ओर फेंककर फिर अपने स्थान पर चला गया।

मम्मी, डैडी अब मेरे पास ही थे...। चुभती हुई दृष्टि जो मेरे मन की धरती को जोत कर चली गई थी, वह अब तक मेरी आँखों में अटकी हुई थी...। नृत्यांगना अपने नगाड़े पर मेंहदी लगे पैर लगा लगाकर ज़ोर ज़ोर से नाच रही थी। सूर्य की किरणों में मूमल के काक महल की लाली शामिल होने लगी...। ऐसा लग रहा था मानो सिर के ऊपर से आकाश गुम हो गया है और पैरों के नीचे की ज़मीन ग़ायब थी। शायद हवा की लहरों पर साज़ों में से निकलने वाली संगीत की धुनों पर तैर रही थी मैं...।

मम्मी ने पूछा, ''तुझे अच्छा लग रहा है यह दौलताणी लड़का?''

मैंने एकदम सिर हिला कर ''हाँ'' की।

मैंने डैडी की ओर देखा। उनके चेहरे की नसें तन गई थीं।

मम्मी ने कहा, ''रिश्ते तय करने वाली औरत से हाँ कह देते हैं।''

''थोड़ा रुको तो सही। गंदी मछली नहीं है हमारी बेटी कि दौलताणी को दोगी। दौलताणी भी कोई कुल है?''

''अच्छे कुल वालों को तो दहेज वसूल करने की लगी रहती है।'' मम्मी ने कानाफूसी की।

''कोई न कोई खुद ही इस हीरे का मूल्य पहचानेगा।''

''आप हमारे सिंधी लड़कों की भुक्खड़ माताओं को नहीं जानते, तभी ऐसा कह रहे हैं।''

''बस करो अब। अभी आज इसका पगार बढ़ा है.....पहले थोड़ी दौलत तो घर में लाये। ऐसे दौलताणी कई मिल जायेंगे....।''

मेरे डैडी घर में डैडी से ज्यादा बॉस बन रहे थे। सो बॉस का निर्णय था.....सिर आँखों पर।

नृत्यांगना नगाड़े से नीचे उतर गई। सूर्य अस्त हो गया। जुती हुई धरती सूखे की स्थिति में फटी हुई जमीन की भाँति प्यासी रह गई।

हम लोग सब से विदा लेकर हाल से बाहर निकल आये।

मैं चुप चाप औंधे मुँह आकर बिस्तर पर पड़ गई।

सवेरे जब मैं कार्यालय जाने के लिये तैयारी कर रही थी, तब मम्मी ने आकर पूछा, "तू रोई है क्या निमू?"

आँसूं था हलक में अटका हुआ। मैं पर्स लेकर बाहर निकल गई। आफ़िस में पहुँचते ही पता चला कि बॉस आज बैंगकाक जा रहे हैं।

वे केवल कुछ क्षणों के लिये ही कार्यालय में आये और मुझे केबिन में बुलवाकर कहने लगे, "छ्नेटी सी अप्सरा! मैं बैंगकाक जा रह हूँ ख़रीददारी करने के लिये। मेरी कुर्सी पर किसी को बैठने मत देना, समझी?"

मेरा चेहरा उतरा हुआ था।

बॉस ने मेरा हाथ पकड़कर कहा, "मित्रों ने जबरन कार्यक्रम तैयार किया। अन्यथा मैं तेरे सिवाय शायद कहीं भी जाना पसंद न करूँ।" मैं अभी तक चुप थी।

बॉस ने पेन होंठों पर रख कर कुर्सी की पिछली टाँगों पर झूलते हुए कहा, "तुम हँस नहीं रही हो तो ऐसा लग रहा है मानो चाँद की चाँदनी गुम हो गई है। देखना, मैं मित्रों से जान छुड़ा कर कितना जल्दी आता हूँ। निमू सच पूछो तो केवल तुझे ही नहीं, मुझे भी यही कष्ट है। मैं अब एक क्षण के लिये भी तुझसे अलग नहीं रह सकता। काश, आज शाम को ही तेरे साथ एक बड़े होटल में कार्यक्रम रखता, परन्तु मित्रों ने मजबूर कर दिया है.....थोड़ा सा तो हँसो निमू ....मैंने तुझे बहुत सताया है, परन्तु मैं भी हर क्षण तुझसे अधिक सताया जा रहा हूँ। कुछ अच्छा नहीं लग रहा है....इस शरीर में केवल आत्मा ही तो नहीं होती..... ।"

न जाने क्यों मेरी आँखों में आँसू आ गये। मैं केबिन से बाहर निकल आई। मैं आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गई। पहले वाली स्टेनो वापिस आ गई थी। वह अपने टाइप राईटर पर बैठी टकटकी लगाकर मुझे जाँच रही थी। फिर उठी और जाकर पानी का ग्लास भर लाई। मैंने आँखों को पोंछा और पानी गटक लिया।

बॉस, केबिन में से निकल कर हम सब- कर्मचारियों को 'हलो-हलो' कह कर, मेरे सिर पर हलकी थपकी मार कर, हँसते हुए चले गये। पीछे से पहले वाली स्टेनो ने कहा, "बास्टर्ड।"

कई दिनों के बाद सरोज से हँसकर बात करने की फुर्सत मिली थी। दौलताणी लड़के से लेकर बॉस के लिये "बास्टर्ड" शब्द सुनने तक की सभी बातें मैंने उसे विस्तार से कह सुनाईं।

सरोज चिन्ता ग्रस्त हो गई। फिर आँखें ऊपर उठाकर कहने लगी, "क्या तुम भी बॉस से प्यार करने लगी हो?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं।" मैंने तड़पते हुए कहा' "यह कलंक कम से कम तुम तो मत लगाओ सरोज। कार्यालय में सभी समझते हैं कि मैंने अंकल पर जादू कर दिया

है, परन्तु अंकल के लगाव के लिये मैं बिल्कुल ही जिम्मेदार नहीं हूँ। पत्नी उन्हें प्यार करती तो शायद .....।"

"हट.....।" धिक्कारपूर्वक सरोज ने कहा, "तूने पुरानी स्टेनो के मुख से बास्टर्ड शब्द सुना, बॉस की पत्नी के मुख से रावण शब्द सुना। अब भी तेरे मन में अंकल के लिये इज्ज़त है ?"

"इज्ज़त नहीं है।" मैंने कहा, "डैडी कहते हैं, सिंधी बॉस किसी सिंधी लड़की को सदैव संतान की भाँति समझते हैं। तभी तो उन्होंने मुझे "ईदनाणी लिमिटेड" में नौकरी करने की अनुमति दी। नहीं तो प्रायवेट सर्विस के विरुद्ध थे डैडी। "

सरोज ने कहा, "अन्य सिंधी बॉस भले ही अपनी फर्म में काम करने वाली लड़कियों को संतान की भाँति समझते हों, ईदनाणी को तो किसी भी सूरत में ऐसा नहीं लगता। तूने अभी विवाह नहीं किया है, इसलिए तू उसकी चतुराइयाँ समझ नहीं पा रही है। वह तुझे बेचैन करके नरक में धकेलना चाहता है...।"

"ऐसा नहीं हो सकता, मेरे लिये वे डैडी से भी अधिक है...।"

सरोज उस दिन अपने पति के साथ हमारे घर में आई। बातों बातों में उसने कहा, "डैडी, अब आप निमू का विवाह करवा दीजिये।"

"डैडी" शब्द सुन कर डैडी को शायद खुशी हुई थी। उन्होंने हँसकर कहा, "भई, सब की लड़कियाँ तीस बत्तीस वर्षों तक कमा रही हैं। यह कौन सा भार है हम पर कि इसका शीघ्र विवाह करवा दें!"

सरोज ने कहा, "यह सही है कि बेटियाँ जो पेट में समाती हैं, वे चूल्हे पर भार नहीं हो सकतीं, परन्तु हर वस्तु का एक समय होता है। सीप स्वाती नक्षत्र में ही मुख खोल कर बैठी रहती है। फिर जब बूंद मिलती है तो हो जाती है हरी भरी। अन्यथा बेचारी, मोती के बिना रह जाती है सिर्फ सूखी हुई सीप।"

डैडी ने कहा, "हमारी स्थितियाँ देखिये न। मैं अपनी आजीविका कमाने में व्यस्त। पत्नी है न लीपने की न पोतने की। अब लड़की बड़ी हुई है तो कहते हैं कि पक्की बेरी पर कोई न कोई स्वयं आकर पत्थर मारेगा.....।"

डैडी की यह बात सुनकर, जाते समय सरोज ने कहा, "तेरा डैडी तो कोई उद्यम करना नहीं चाहता।"

सारा महीना बीत गया। अचानक अंकल का एक मित्र आया। उसने मुझसे आकर पूछा, "मलाई! तेरा अंकल कब आ रहा है ?"

"मलाई!" शब्द सुनकर मैं ज़रा सतर्क हो गई। यह आदमी तो कोई लफ़ंगा लग रहा था। इसलिये मैंने रूखेपन से कहा, "मुझे पता नहीं।"

वह दाँत निकाल कर हँसने लगा, ''तुझे नहीं पता होगा तो किसे पता होगा? भला, उसे फोन तो लगाओ।''

मैंने टालते हुए कहा, ''अभी उनका फोन आने वाला है। वहाँ से उन्हें सीधा काल करने की सुविधा मिली हुई है।''

''यूँ नॉटी गर्ल!'' ......हीं....हीं करता वह अम्बवाणी काफ़ी देर तक हँसता रहा। फोन सचमुच उसी समय आ गया। उसने मुझसे फोन छीन कर एकदम स्वयं बात करना प्रारम्भ किया।''कितनी ख़रीदी की है यार।.....पूरे माह में केवल पाँच?.....यहाँ?....मलाई? छोड़ यार घर की बात। भई गुलाब, तुम भले वहाँ मस्ती मारते रहो। तेरे पास पैसे की कौन सी कमी है। क्या फोन मलाई को दूँ? हाँ भई मलाई, फोन लो।''

मैंने फोन लिया। पर यह क्या फोन पर कोई दूसरी लाईन भी जुड़ गई थी, ''मैं कहती हूँ कि अब बिना देर किये वापिस आ जाइये।'' बैंगकाक से बॉस ने पूछा, ''क्यों...क्यों मलाई तेरी आवाज इतनी बदली हुई क्यों है?'' फोन पर फिर किसी औरत की आवाज़ आई, ''आज कैसे आपको मेरे विवाह के समय वाला नाम याद आया है? हाँ, मैं मलाई हूँ, पर अब अपनी सब खुशियाँ नष्ट हुई समझो। शीघ्रातिशीघ्र चले आओ...।'' क्यों क्या हुआ है? कुछ बताओ तो सही। ''क्या बताऊँ?'' औरत की आवाज़ थी,''बच्ची सख़्त बीमार है।'' ''क्या हुआ है उसे? क्या हुआ है? बताती क्यों नहीं हो?'' अब बॉस का फोन केवल मेरी ही लाईन पर था। मैंने चुपचाप फोन रख दिया।

अम्बवाणी ने कहा, ''मलाई! बॉस ने तुझे ऐसा क्या बताया है कि तेरा रंग उड़ गया है।''

मैंने गुस्से से अम्बवाणी की ओर देखा।

अम्बवाणी जाते जाते कहता गया, ''वह आफ़त है, परन्तु तुम भी कयामत हो।''

दूसरे दिन लगभग दस बजे बॉस बैंगकाक से लौटकर एयरपोर्ट से सीधे कार्यालय में आये। उन्होंने बैग खोल कर सभी कर्मचारियों को उपहार दिये। मुझे भी दिये। बॉस ने मुझे केबिन में बुलवा कर कहा, ''ये मत समझना कि मैं तेरे लिये केवल यही उपहार लेकर आया हूँ। तेरे लिये तो लाया हूँ यह सब।'' उसकी बैग के तल में एक फ्लैप था। उसने उसे खोला। उसमें कई पत्रिकाएँ थीं, जिन के मुख्य पृष्ठ पर बड़े अक्षरों में लिखा था, ''सैक्स लिटरेचर''

बड़ी अर्थपूर्ण निगाह से वे मेरी ओर देखकर कहने लगे, ''आज रात यह सब पढ़ लेना। कल होंगे बस तू और मैं। शानदार होटल का शानदार कमरा......।''

''अंकल!'' मैंने ज़रा गुस्से से कहा और उठ खड़ी हुई।

''धैर्य रखो।'' वे मेरी बाँहों पर हाथ फेरने लगे, ''देखो, बच्ची न बनो। केवल

आत्मिक प्यार ही सबकुछ तो नहीं और मैंने तो तुझे इतना प्यार किया है कि अपनी गुड़िया को किसी दूसरे की बाँहों में जाता देखकर सहन ही नहीं कर पाऊँगा।''

मेरे मन में आया कि मैं उसे कह दूं, ''रास्कल! बदमाश! मुझसे एक दो वर्ष छोटी तेरी अपनी बेटी है।''

आँखों को आग और आँसूं बहाने से, धैर्य से रोक कर, मैं केबिन से बाहर निकल आई। मैंने त्याग पत्र टाईप किया और जल्दी-जल्दी जाकर टेबल पर रख कर, धड़ाम से दरवाज़ा बंद कर, सीधे घर चली आई।

घर में घुसने की बजाय, मैंने सीधे जाकर सरोज के दरवाजे पर दस्तक दी। मैं उसे गले लगा कर, पता नहीं कितनी देर तक सिसकती रही। ''सरोज तू सच कहती थी, तू सच कह रही थी, अंकल रास्कल बदमाश है।''

सरोज अपनी साड़ी के पल्लू से मेरे आँसूं पोंछने लगी।

''अंकल तो राक्षस है, परन्तु तेरा डैडी भी बददिमाग़ है।''

अनुवाद : खीमन यू. मूलाणी

❑❑❑